वेदों में इन्द्र देवता का बहुमुखी स्वरूप

(प्रथम पुष्प)

जगत् में जो भी क्रिया-कलाप हो रहे हैं वे सभी एक अदृश्य शक्ति द्वारा निष्पन्न हो रहे हैं। वह शक्ति है परमात्मा की इन्द्र शक्ति। वेदों के देवताओं का विभाजन महर्षि यास्क ने निघंटु एवं निरूक्त के अनुसार तीन प्रकार का माना है -

१. पृथ्वी स्थानीय २. अन्तरिक्ष स्थानीय ३. द्यौ स्थानीय

इन्द्र अन्तरिक्ष स्थानीय देवता है। देखने को तो अन्तरिक्ष मानुषी नेत्रों से नीला अवकाश मात्र दृष्टि गोचर हो रहा है परन्तु जब बारीकी से अध्ययन करते हैं तो उसमें अनेक सन्निहित सूक्ष्म शक्तियां परत-दर-परत उपलब्ध होती हैं। अनेक प्रकार के मरूत् गण प्रवाह, आदित्य रश्मियों के परमाणु विन्यास सूक्ष्म जलीय कण, शब्दों का संचरण, अनेक गैसें तथा अन्य विविध प्रकार के परमाणुओं का इसमें प्रवाह गतिशील है। मृत्यु के उपरान्त जीवात्माओं का आवागमन भी यहाँ होता रहता है। अन्तरिक्ष में अन्य वैदिक संदर्भ के देवताओं की उपस्थिति है परन्तु वे सभी इन्द्र के सहायक रूप में माने गए हैं। इन्द्र को अनेक विशेषणों के साथ वर्णन किया गया है जिससे यह भासित हो रहा है कि इन्द्रशक्ति अनन्त है। अन्न से लेकर प्राणशक्ति तक में इन्द्र देवता का महत्त्व है।

इन्द्र की व्याख्या निरूक्त में महर्षि यास्क ने इस प्रकार की है-

इन्द्र इरां दृणातीति, वेरां ददातीति, वेरां ददातीति, वेरां दारयत वेरां धारयत, इति वाइन्दवे द्रवतीति वेन्दौरमत इति वेन्धे भूतानि इति (नि. १०/८)

इन्द्र अन्न का उत्पादक, दान कर्त्ता, धारण करनेवाला है। चन्द्र ज्योति को प्रकाशित करता है, परमाणु का आपस में समायोजन करना या समस्त पदार्थों की व्यवस्था करना इन्द्रशक्ति का कार्य है। जो भी यज्ञ-विधि में इन्द्र देवता को आहुतियां दी जाती हैं वे शक्ति प्राप्त हेतु दी जाती हैं। ऋग्वेद के प्रथम मंडल के प्रथम सूक्त में केवल अग्नि देवता के मंत्र हैं, दूसरे सूक्त में ४-६ मंत्र इन्द्रवायु के हैं। इन मंत्रों में मधुछंदा ऋषि इन्द्र तथा वायु के योग से अन्तरिक्ष में जो समीकरण वर्षा आदि बनते हैं उन पर प्रकाश डालते हैं। मनुष्यों के कर्मानुसार उन्हें जो भोग प्राप्त होते हैं उसी परिमाण में इन्द्रवायु मिलकर उसका विभाजन अन्तरिक्ष से पृथ्वी पर लाकर कर देते हैं। तिसरे सूक्त में भी ४ से ६ तक तीन मंत्र इन्द्र देवता के हैं- प्रथम मंत्र-

इन्द्रायाहि चित्रमानो सुता इमे त्वायव:
अण्वीभिस्तना पूतास: ।

हे परमात्मा रूप इन्द्र ! आपकी यह अद्‌भुत रचना रूप संसार में प्रकाशित हो रहा है। इसमें अनेक पदार्थ उत्पन्न होकर मूर्तिमान हो रहे हैं। धनों का भंडार सर्वत्र वर्तमान होने से आपकी शक्ति का प्रदर्शन हो रहा है। अगले पांचवें और छठे मंत्र में बुद्धि की प्रखरता को बढ़ाने वाला, अतिवेग को प्राप्त कराने वाला भी कहा गया है। शरीरस्थ धातुओं का निर्माण व उन्हें यथास्थान पहुँचाने का कार्य भी प्राणों के रूप में इन्द्र का कार्य है। तीनों मंत्रो में (आयाहि) पद का प्रयोग हुआ है, इससे यह स्पष्ट होता है कि इन्द्र शक्ति प्राप्त होने के लिए यह उस अवस्था को दर्शाता है जब साधक एकाग्रता से किसी कार्यसिद्धि के लिए परमात्मा से सायुज्य करता है। शक्ति और गतिशीलता का अधिष्ठाण इन्द्र देवता है जिससे यह संसार दोनों को प्राप्त किए हुए हैं।

चौथा सम्पूर्ण सूक्त इन्द्र देवता परक है।

प्रथम मंत्र -

सूरूपकृलुमूतये सुदुघामिव गोदुहे। जुहूमसि द्यविद्यवि ।।

१) इन्द्र के गुणों का वर्णन इस मंत्र में इस प्रकार किया गया है कि जैसे दूध की इच्छावाला मनुष्य गौओं को दोहकर अपनी कामना को पूर्ण कर लेता है, वैसे ही इन्द्र-विद्या द्वारा संसार में हम विद्यावान होकर अपनी कामनाओं को पूर्ण करने के लिए पदार्थों से विभिन्न प्रकार के लाभकारी साधन प्राप्त कर सकते हैं। आगे के ९ मंत्रो का आशय इस प्रकार है -

२) इन्द्र हमें विविध प्रकार के पदार्थ प्राप्त कराता है यह उसका महान उपकार है।

३) विद्वानों से सुखकारी विद्याओं को प्राप्त कराने में बुद्धि में बल प्रदान करता है और पृथ्वी से लेकर परमात्मा का ज्ञान भी वही कराता है।

४) इस मंत्र में कहा गया है कि इन्द्रविद्या के जानने वाले विद्वानों से अपने संदेहों को दूर करके विद्या को ग्रहण करते रहें।

५) सभी समाज आस्तिक बने, नास्तिक कोई न हो।

६) यदि किसी के मन में किसी के प्रति द्वेष पैदा होवे तो वह द्वेष इन्द्र-भक्ति द्वारा नष्ट हो जाय जिससे सभी मनुष्य मित्रभावसे रहते हुए जीवन व्यतीत करें।

७) इन्द्र-विज्ञान भी मनुष्य के यान्त्रिक क्रिया कलापों के लिए अपना विशेष महत्व लिए हुए हैं। यानादि का संचालन भी इन्द्र शक्ति से होने का वेदों में विधान है।

८) वर्षा के संदर्भ में तो मानों इन्द्र देवता ही अपनी शक्ति से वर्षा करता है। वह वृत्र (मेघ) का हनन करके उसके अवयवों को छिन्न-भिन्न करता है। और मरूत गणों की सहायता से यत्र-तत्र ले जाकर बूँद-बूँद रूप में पृथ्वी पर वर्षा कराता है।

९) संसार के असंख्यात पदार्थों में इन्द्र-शक्ति निहित है। सृजनात्मक रूप से भी पदार्थों का प्रयोग किया जा सकता है और विध्वंसात्मक रूप से भी।

१०) मनुष्य को इन्द्र रूप परमात्मा की स्तुति मात्रही केवल करते रहने से काम न चलेगा वरन उसका स्मरण करते हुए उद्योगी होकर जनहित के लिए विज्ञान की भी उन्नति करते रहना चाहिए।

अन्य देवताओं का सहयोग लेकर मनुष्य शान्ति प्रदान कराता है जिससे बेचैनी व्याकुलता आदि उद्वेग मन-मस्तिष्क में न समावेश करें-

शं न इन्द्राग्नी भवतामवोभि: शन्न इन्द्रावरूणा रातहव्या।
शमिन्द्रा सोमा सुविताय शं यो: शन्न इन्द्रा पूषणावाजसातौ।

मानव जीवन का लक्ष्य अभ्युदय व नि:श्रेयस की प्राप्ति करना है, तब इन्द्र सामर्थ्य से उद्योग करते रहने से दोनों को प्राप्त करने का सामर्थ्य स्वत: ही प्राप्त होता रहेगा यदि हम इन्द्रिय निग्रह करते हुए योगाभ्यास पूर्वक भगवान का चिन्तन निरंतर करते रहें। यदि हम वेदों का स्वाध्याय करते रहेंगे तो देवों की शक्तियाँ भी

हमे प्राप्त होती रहेंगी क्योंकि यह ब्राह्मण वचन है-

तपो वै स्वाध्याय:

स्वाध्याय (वेद शास्त्रों का अनवरत अध्ययन) ही सच्चा तप है और बिना तप के न ज्ञान होगा न मुक्ति। जब वेद परमेंश्वर की वाणी है तो हमें श्रध्दा पूर्वक इसका स्वाध्याय करते रहना चाहिए। जब वेदों का अध्ययन अध्यापन हमारे भारत में छूट गया तो हमारा ओज-तेज-शक्ति का धीरे धीरे ऱ्हास होता गया और हम विदेशियों द्वारा पराभव को प्राप्त हो गये । अत: अब हम परमात्मा से पुन: जगत गुरू बनने के लिए प्रार्थना करें और पुरूषार्थी होकर कर्मशील बने।

स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवा स्वस्ति न: पूषा विश्ववेदा:।
स्वस्ति नस्तार्क्ष्यो अरिष्टनेमि: स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु।

-प्रहलाद स्वरूप आर्य
आर्य समाज नयागंज ,हाथरस (उ. प्र)